ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

पब्लिक स्कूलों में कार्यरत शिक्षिकाओं की समस्याएं एवं मेरठ क्षेत्र के विशेष संदर्भ में–

डॉ.अज्जुला राजवंशी
समाजशास्त्र विभाग
आर.जी.पी.जी. कॉलेज, मेरठ।
ईमेलः dr.anjularajvanshi@gmail.com

आधुनिकता की दौड़ में गरीब से गरीब व्यक्ति भी आज शामिल हो गया है। आधुनिकता का पर्याय माने जाने वाली वेशभूषा, भौतिक संसाधन तथा शिक्षा ने अभिवावकों व उनकी संतानों को पाश्चात्य संस्कृति से पूर्जरूपेण जोड़ दिया है। प्रो. एम.श्रीनिवास का मानना है कि आधुनिक शिक्षा के विकास के कारण बुद्धिवाद का विकास हुआ है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में शिक्षा के महत्व पर प्रो. योगेंद्र, एडवर्ड सिल्स, प्रो. एस.एस दूबे आदि विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए है। वस्तुतः आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का मूल आधार वैज्ञानिक चिन्तन है। मेरठ शहर के गली–मौहल्लों में खुले पब्लिक स्कूलों में पढ़ाने वाली 20 शिक्षिकाओं पर प्रस्तुत अध्ययन किया गया है। शिक्षा के स्तर व गुणवत्ता को आंकने का आंकलन करने के लिए विस्तृत शोध अध्ययन हेतू यह शोध पत्र विचारणीय पक्ष प्रस्तुत करने का एक प्रयास है।

शहरी चकाकौंध से प्रभावित भारतीयों परिवारों ने द्विपक्षीय या बहुपक्षीय पारिवारिक आय पर ध्यान देना प्रारम्भ किया। जहां दूसरे विश्वयुद्ध से पहले महिलाओं के लिए वेतनवाली नौकरी करना या परिवार वालों द्वारा करवाना अपमानजनक व उपहास का पात्र माना जाता था, वहीं आज सभी आयु वर्ग के लोग छोटी या बड़ी नौकरी या स्वरोजगार करने वाली लड़की को प्राथमिकता देने लगे है। के.एम. कपाड़िया ने लिखा है कि परिवार को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण पहलू महिलाओं का नौकरी करना है, जो शिक्षा द्वारा तथा आज के आर्थिक कारणों के कारण हो सका है।

सन् 1961 और 1968 रॉस ने अपने अध्ययन the Hindu family in Its Urban Setting में यह स्पष्ट कर दिया है कि क्यों पत्नी का वैतनिक काम–धंधों में लगना अब समाज अनुचित नहीं मानता है ? उनका मानना है कि 'निःसंदेह, इतनी संख्या में विवाहित मध्यमवर्गीय हिंदू महिलाओं का बिना विरोध के नौकरी कर सकने का मुख्यामुख्य कारण है कि आज मध्म वर्ग की आर्थिक समस्या को सभी

ISSN: (P): 0976-5255, (e): 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

समझने लगे है और यह भी समझने लगे है कि परिवार के रहन–सहन का स्तर बनाए रखने के लिए पत्नी की कमाई बहुधा अनिवार्य हो जाती है।

पब्लिक स्कूलों की संख्या में दिन–प्रतिदिन इजाफा हो रहा है। अंग्रेजी शिक्षा और पब्लिक स्कूल एक–दूसरे का पर्याय है। मोजम्मिल हसन ने 'आरजू' ने अपने पुस्तक भारतीय माहिला एवं आधुनिकीकरण में लिखा है कि अंग्रेजी भाषा का प्रचार आरम्भ में विषेशताः बंगाल में हुआ। उत्तर भारत में लोग इस ओर उम्मुख नहीं हुए। इसका एक कारण था पश्चिमोत्तर प्रदेश और अवध (आज का उत्तर प्रदेश) को बहुत बाद में ब्रिटिश राज्य में मिलाया गया। कलकत्ता विदेशी व्यापारियों का केंद्र था, फलतः अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों को व्यावसायिक फर्मो और प्रशासकीय दफ तरों पाने की सुविधा थी।बंगाल से बाहर ये सुविधाए उपलब्ध नहीं थी।ईसाई मिशिनारियों के साथ सम्बद्ध होने के कारण वहां के लोग अंग्रेजी को शंका की दृष्टि से देखते थे। शिक्षा में पिछड़े रहने के कारण उत्तर भारत के सांस्कृति विकास से भी गत्यावरोध आया, जिसे दूर करने में समय लगा। नवीन शिक्षा–पद्धति का लेखा–जोखा लगाने पर इसमें कई अन्तर्विरोध दिखायी पड़ते है। सच तो यह है कि अंग्रेजी को अपने दफ्तरों के लिए देशी बाबूओं की आवश्यकता थी, जिसमें उनका व्यवसाय और प्रशासन निर्बाध चल सकें। ईसाई मिशनरी अंग्रेजी शिक्षा माध्यम से लोगों को ईसाई बनाकर पुष्प लूटने के चककर में थे। इस देश क उत्साही व्यक्तियों की दृष्टि से भी सामान्यतः रोजी–रोटी का सवाल ही प्रमुख था। अतः यह कहना कम भ्रानितपूर्ण नहीं है कि इस शिक्षा–पद्धति के कारण ही राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कौन सी पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त की थी? कांग्रेस की स्थापना के पूर्व उनकी रचनाये में देश काल की अनेक समस्याएं मुखरित हुई है। इस शिक्षा–प्रणाली के कारण छोटा सा बुद्धिजीवी मध्म वर्ग जरूर पैदा हुआ, पर लोग अधिकांश लोग निरक्षर रह गये। फिर भी, इसमें एक तरह का धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण बना जो मध्यकालीन धार्मिक रूढ़ियों से मुक्त होने के कारण तर्कसम्मत इौर इहलैकिक हो सका है वैयक्तिक स्वतन्त्रता इसकी दूसरी उल्लेखनीय देन है। आश्रमधर्मी घेरेबन्दी से आहर निकलकर व्यक्ति के अपने निर्णय को प्रमुखता मिली। मध्यकालीन धार्मिक कथाओं को विश्वसनीय बनाने और उन्हें आधुनिक युग की समस्याओं से जोड़ने के मूल में भी यहीं प्रवृत्ति क्रियाशील थी।

पब्लिक स्कूलों में शिक्षिकाओं की स्थिति क्या है ? उन्हें परिवार व स्कूलों के स्तर पर किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? क्या वे सरकारी व पब्लिक स्कूलों में पढ़ाई के तरीके में कोई अन्तर पाती है ? क्या विद्यार्थियों के स्तर में वे कोई फ़र्क महसूस करती है ? वे जिस स्कूल में पढ़ाती है क्या उस स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाना चाहेगीं ? स्कूल से मिलने वाले वेतन से सन्तुष्ट है ? आप अपने स्कूल प्रशासन, विद्यार्थी व अभिवावकों के मध्य एक अच्छा सम्बन्ध बनाने के लिए क्या सुझाव देना चाहेगीं ? आदि प्रश्नों पर मेरठ के ब्रहमपुरी, माधवपुरम, शताबदी नगर, इन्द्रा नगर , हरि नगर तथा उद्योगपुरम के विभिन्न पब्लिक स्कूलों में पढ़ाने वाली 20 शिक्षिकाओं से उपलब्धता के आधार पर पक्षपातरहित होकर जानारी हासिल की गई। इस अध्ययन के दौरान विद्यार्थी, स्कूल प्रशासन, अभिभावक व साथी शिक्षिका को उत्तरदाता के साथ नहीं रखा गया। साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से प्राथमिक तथ्य सामग्री एकत्र की गई। द्वितीयक तथ्य सकंलन के लिए पुस्तकों, शोध ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं तथा इन्टरनेट की सहायता ली गई।

शिक्षित महिलाओं व शिक्षित कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृद्धि काा मुख्य कारण उनकी बढ़ती आर्थिक आवश्यकता तथा आत्मनिर्भर होने की प्रवृत्ति है। परिवारिक आय में सहयोग करना आज शौक से ज्यादा आवश्यकता बन गई है। रोटी, कपड़ा, मकान के साथ–साथ अन्य भौतिक आवश्यकताओं के लिए पैसे की जरूरत होती है। पहले जहां महिलाओं को पैसे कमाने के लिए घरों में काम करना, मजदूरी करना, सामान बेचना तथा घर पर छोटा–मोटा व्यवसाय करना पड़ता था वहीं आज शिक्षा प्राप्त करके वे निश्चित वेतनमान पर सरकारी व गैर सरकारी नौकरी कर सकती है। साथ ही, पहले नौकरी के नाम पर स्कूल में पढ़ाना, जहां ज्यादा स्वीकार्य व लाभप्रद माना जाता था, वहीं अब दुकानों, कॉल सेंटर व ऑफिस में काम करने पर भी परिवार को आपत्ति नहीं होती। पहले घर के पास ही काम करने को प्राथमिकता दी जाती थी, लेकिन अब घर से एक–नदो घंटे या उससे भी अधिक समय की यात्रा करना, अपने (स्कूटर, कार, साइकिल आदि) या जन यातायात साधनों (जैसे बस, ट्रेन व ऑटो) को भी बुरा नहीं माना जाता। देसाई के अनुसार महिलाएं धीरे–धीरे यह महसूस करने लगी है कि इंसान के रूप में उनका भी एक निजी कामित्व है तथा उनके जीवन में का लक्ष्य भाग अच्छी पत्नियां और समझदार माएं बन जाने से पूरा नहीं हो पाता , बल्कि वे यह भी मानने लगी है कि वे सब भी अब नागरिक समुदाय और संगठित समाज की समस्याएं है।

इस अध्ययन हमनें मेरठ के लगभग 2400 स्कूलों को सुविधाएं तीन वर्षो में विभाजित किया। विभाजित करने हेतू कक्षा एक से कक्षा बारह तक के स्कूलों को शामिल किया गया। कक्षा एक तक वाले अकिधतर स्कूलों में प्ले स्कूल, नर्सरी, के.जी व लोअर के.जी की कक्षाएं भी शामिल की गई है, लेकिन बाध्यता नहीं थी। जिन स्कूलों में कक्षा का स्तर उपलब्ध थे, उन्हें छोड़ा नहीं गया। तीन वर्ग इस प्रकार बनाए गए है।

A प्रतिष्ठित स्कूल सर्वप्रसिद्ध

(Well known & highly demanding famous school as St. Marys, Sofia, Diwan, Meerut Public School, Diwan Public School international,KL international, The Aryans, Vidhya Global, Garge ets.

B द्वितीय पसन्द प्रतिष्ठित स्कूल

(Second Choise famous school as Meerut City Public School, Vivekanand Public School, Mahaveer Academy Chirag, RIshaba, Karan, Deep Academy, City Look Publice, Delhi public School, St. Thomas School, Aray Samaj etc.

C आस–पास के स्कूल

(Local Area based School as Shanti Public School, SD, Little Angels, Little School ets. Local brand.

सर्वप्रथम पब्लिक स्कूलों की शिक्षिकाओं से नौकरी करने का कारण जानने का प्रयास किया गया। अधिकतर शिक्षिकाओं का मानना था कि वे इस नौकरी के माध्यम से परिवार को आर्थिक सहयोग दे पाती है तथा अपने लिए अतिरिक्त आय प्राप्त करने के लिए ट्यूशन्स जुटा पाती है। आत्मनिर्भर के साधन के रूप में भी इस नौकरी को उन्होंने उपयुक्त माना है। साथ ही लगभग आधे दिन के इस घर से बाहरी कार्स को उन्होंने उपयुक्त पाया है। 20 में से मात्र 2 शिक्षिका ऐसी मिलीं जिन्होंने खाली समत व्यतीत करने व अनुभव प्राप्त करने के लिए इस कार्य को किया है।

कितने समय से वो इस विद्यालय या अन्य विद्यालय में पढ़ रही है। इस प्रश्न के उत्तर में मा तीन शिक्षिकाएं ऐसी जो पहली बार पढ़ा रही है। बाकी 17 शिक्षिकाएं पिछले 2–7 सालों से इसी या अन्य स्कूल में शिक्षा प्रदान कर रही थी। पांच शिक्षिकाओं को छोड़कर बाकी सभी शिक्षिकाएं बी.एड पास कर चुकी थी। केवल दो शिक्षिकाएं ही इंटर पास मिली और वे भी प्राइवेट पढ़ाई कर रही है। एक प्राइवेट बी.ए तृतीय वर्ष में है और दूसरी बी.कॉम द्वितीय वर्ष में है। रेग्यूलर ना पढ़ने का कारण पारिवारिक लोगों की असहमति, असहयोग तथा बहुत ज्यादा फीस का होना था।

पब्लिक स्कूलमें महिलाओं की स्थिति क्या है ? प्रश्न के उत्तर में शिक्षिकाओं ने कहा कि काम का तनाव ज्यादा है। कुछ मामलों में स्थिति अच्छी है। जैसे सीखने–सिखाने का अवसर, विद्यार्थियों का रहन–सहन तथा कक्षाओं, भवन व शौचालय की अच्छी व्यवस्था है। कमी के बारें में बताते हुए शिक्षिकाओं ने कहा कि छुट्टी ना मिलना, छुट्टी मांगने पर वेतन कटना, छुट्टियों कम मिलना, समय ज्यादा होना, अन्य गतिविधियों का आयोजन, अभिभावकों का दबाब, पब्लिक स्कूल की शिक्षा के अनुरूप छात्र के घर का माहौल ना होना

परिवार व स्कूल के स्तर पर समस्याओं का स्वरूप बिल्कुल अलग है। परिवार के लोग चाहते है कि वे घर पर भी पूरा समय दें, लेकिन यह संभव नहीं हो पाता। परिवार के लोगों का घरेलू कार्यो में सहयोग नहीं मिला पाता। अपने बच्चों की पढ़ाई में बाधा आती है। स्यव ंके स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखा जा पाता। स्कूल में आने–जाने का नियम है। देरी हो जाने पर आधे दिन का वेतन कटना,, शुल्क लगना, कारण बताओं नोटिस देना, नौकरीसे निकालने की धमकी देना आदि कारण है।

सरकारी व पब्लिक स्कूलों के पढ़ाई के स्तर में जमीन–आसमाप का अंतर शिक्षिकाएं महसूस करती है। उन्होंने पाया कि बहुत ज्यादा किताबों व अन्य सामग्री का बोझ है। जो जानकारी बच्चों को कम किताबों व पैसे के बोझ से दी जा सकती है। उसके लिए दिखावा है तथा बच्चों को व्यवस्ता की जगह तनाव में रखना है। दोनों तरीके के सरकारी व पब्लिक स्कूलों में Dress teachers के dediction and efforts, books, Langvage, Facility, Awareness के और जवाबदेही का फर्क है।

हालांकि हमारे उत्तरदाता की संख्या करोड़ों की जनता में से ना के बराबर थी, लेकिन अधिकतर ने कहा कि जितना पैसा माता–पिता खर्च करते है तथा स्कूल वाले मांगते है उस हिसाब से बच्चों का परीक्षा परिणाम नहीं आता। Home exam के कारण व Grading system के कारण pass तो सभी हो जाते है, लेकिन गुणवत्ता का अभाव देखने को मिलता है। थोड़ा सा Bulding, principal office, reception, toilet bathroom, books, classroom, canteen, trancport facilities के कारण बच्चें व अभिभावक दोनों कुछ अच्छा करने के लिए प्रयासरत रहते है, जबकि सरकारी स्कूलों में जबरदस्ती का सौदा होता है, क्योंकि उसमें Below poverty तथा line Lower Lower cless (अतिनिम्म वर्ग) के लोगों के बच्चो आते है, जिनके पास दो वक्त की रोटी का भी जुगाड़ नहीं है। वे अपने बच्चों को काम पर भोजन ज्यादा पंसद करते है और भी अनेक छुपे हुए कारण है, जो सरकारी व पब्लिक स्कूलों के विद्याार्थियों के स्तर में अंतर को दर्शाते है, जिन पर बड़े स्तर पर शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

जिस स्कूल में शिक्षिकाएं शिक्षणकार्य कर रही है, वहां अपने बच्चे को पढ़ने के संदर्भ में पूछे गए प्रश्न पर शिक्षिकाओं ने कहा कि इतनी कम सेलेरी में बच्चों को अन्य पढ़ाना थोड़ा मुश्किल हो जाता है, लेकिन हमारा प्रयास बच्चों को अपने से अलग पढ़ाने का ही है, क्योंकि Local Area School में पढ़ाने

वाली शिक्षिकाएं आराम से Second Choise famous school में तथा Second Choise famous school वाली शिक्षिकाएं Well known & highly demanding famous school में बच्चों का admission कराने में स्यवं को सक्षम पाती है तथा बच्चों व परिवार में लोगों के undue advantage लेने से भी बच जाती है।

स्कूल से मिलने वाले वेतन से संतुष्टि के प्रश्न पर उनका कहना था कि जितनी मेहनत है, उतना वेतन तो नहीं मिलता। बच्चियों की संख्या व फीस के हिसाब से Management हमें कुछ नहीं देता है। लेकिन कुछ ना होने से तो ये अच्छा ही है.... फिर कुछ Tutions मिल जाते है तो और भी पैसा कमा लेते है।

शिक्षिका, स्कूल प्रशासन, विद्यार्थी व अभिभावक के मध्य एक अच्छा संबंध बनाने के लिए नियमों व व्यवस्था के साथ–साथ शिक्षण में पारदर्शितो होना, बच्चों की वास्तविक स्थिति से अवगत करान Interacting माहौल बनाना, Book-Dress Public में स्वतंत्रता देना आदि अच्छा माध्यम हो सकता है। एक शिक्षिका के सुझाव को यहां देना चाहूगी। उन्होंने कहा कि अगर हमें अपने पद की गरिमा और अपने महत्व को समझना है तो प्रत्येक बच्चे को अपने बच्चे की तरह देखना होगा। अपने बच्चें की तरह शिक्षा देनी होगी। साथ ही, उन्होंने अभिभावकों से भी अनुरोध भी किया कि अगर किसी वजह से उनके बच्चों को सजा दी जाती है या उन्हें bad remark दिया जाता है तो शिक्षिका व स्कूल प्रशासन पर आरोप लगाने व झगड़ा करने से पहले अपना व अपने बच्चे का आंकलन करें लें। कोई भी बिना बच्चे को सजा नहीं देता है। अभिभावकों के pressesur और प्रशासन के शिक्षिकाओं पर दबाब के कारण कोई भी शिक्षिका सिखाने का अति उत्तम प्रयास नहीं करती है, कयोंकि जब आप किसी बहुत अच्छा सिखाने का या बनाने चाहते हो तो डांटते भी हो, मारत भी हो, सजा भी देते हो, प्रोत्साहित भी करते हो और प्यार भी करते हो। इतिहास गवाह है कि ऐसा कोई बच्चा नहीं होगा है जिसे उसके माता–पिता और भाई–बहन ने डांटा या मारा ना हो और ऐसा कोई सफल व्यक्ति नहीं होगा जो अपने माता–पिता, भाई–बहन या गुरू से सजा ना पाया हो। अगर हमें एक आदर्श बच्चा, विद्यार्थी या नागरिक तो निष्पक्ष भाव से बच्चे, शिक्षक व प्रशासन का आंकलन करना चाहिए तथा अपनी भूमिका व वास्तविकता को भी देखना चाहिए।

पब्लिक स्कूलों में शिक्षा व व्यवहार की गुणवत्ता की उम्मीद समाज द्वारा की जाती है। अतः अगर शिक्षिकाओं को बिना किसी तनाव के व सीमित बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने को अवसर प्रदान किया जाए तो हमारे देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे व स्कूलों को अच्छे ओहदे पर प्रतिष्ठत विद्यार्थी मिलेंगे। साथ अभिभावकों को सद्गुण सम्पंन बच्चे मिलेंगे। शिक्षक से ज्यादा शिक्षिकाएं बच्चों को सहनशीलता के साथ व सिखा सकती हैं अगर अभिभावक अपने बच्चों में सीखने की ललक व अपनी पहचान बनाने के लिए कुछ अच्छा करने का जज्बा उत्पन्न करें तो शिक्षिकाए अपनी पारिवारिक व सामाजिक समस्याओं से बाहर आकर अपना उत्तम प्रदर्शन कर पायेगीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.आरजू मोजाम्मिल हसन– 1993, भारतीय महिला और आधुनिकीकरण
नई दिल्ली– कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स

2. Ross, Aileen D. 1961. The hindu Family in its urban setting. University of Toronto Press

3.Derai, Neera. 20 july 2009 Pionear of Womens Studies in india south aish citizens web (www.sacw.net>article 1035)

4. Kachchhi parvatik.(april-june 2014) A study of adjustment problem among working women and non working women. The internationaljournal of Indian psycholosy volume 01. Issue:03. Issn 2348-5396. Page no. 138-140

5. Akhtar, misbalr.(august 2013) A comparation study of government and private school techers to explore the causes of absenterim at secondary level in ristueit bahawalnager, Punjab, Pakistan. Journal of eduvation and vocational research. Vol. 4, no. 8 page 225-229

6. Job satistaction among teachers of prinats and government school mediam research jounrnals.com

7. Slacki, dr. sandrel. August 2002 woman teachers' empowereing India. Teacher gaining through a gender lens. Newyork: untied nations children fund.